# परिवेष-नीति का अंतर्राष्ट्रीय संघ

**Headquarters**
Inter-Research, Nordbünte 23 + 28
21385 Oldendorf/Luhe, Germany
www.eeiu.org
Fax: +49 4132 8883; Email: eeiu@eeiu.org

**General Office**
A. O. Kovalevsky Institute of Biology of Southern Seas
National Academy of Sciences, Nakhimov Prospekt, 2
Sevastopol 99011, Ukraine
Fax: +380 692 553578 / 592813; Email: iur@ukrcom.sebastopol.ua

## मानवता एक नई नीति को अपनाने से ही जीवित रह सकती है : परिवेष-नीति

परिवेष-नीति ऐतिहासिक नीति से अलग है। परिवेष-नीति के मूल में श्रुति, धार्मिक विश्वास, या दार्शनिकता जैसी कोई बात नहीं है, इस के मूल में है वैज्ञानिक अध्ययन, विद्या, और मानव-प्रकृति का एकता। परिवेष-नीति का विषय एक ही जाति नहीं है, बल्कि अनेक अलग-अलग साथ-साथ रहनेवाले जीव-समुदाय।

हमारे नीति संबंधी, निरंतर संशोधित होते विचारों द्वारा हम मानवता के भविष्य के लिए नए मार्ग खोलने का प्रयास कर रहे हैं।

## परिवेष-नीति का आगे विकसित पाठ : 01.05.2002*

ओट्टो किन्ने (Otto Kinne)
EEIU Headquarters, Nordbünte 23 + 28, 21385 Oldendorf/Luhe, Germany

*अनुवादक : Arvind Lal Bhatia, University of Rajasthan, India, and Franklin C. Southworth, University of Pennsylvania, USA*

नैतिकता मानवता की आधारशिला है – मानव-आचराण, सोच-विचार, और आस्था का पथप्रदर्शक। कोई भी मानव समाज नीति का पालन किये बिना फल-फुल नहीं सकता।

मानव समाज गतिशील होते हैं, वे कई तरीके से और बढ़ती हुई गति से बदलते रहते हैं। दूसरी ओर, नैतिकता के पारंपरिक विचार साधारणतः स्थिर और हठधर्मी होते हैं। इस असंगति के कारण नीति और समाज के बीच में चिंता और वैमनस्य बढ़ते रहते हैं, और इस स्थिति से एक नवीन, अनुकूलनीय, आधुनिक नैतिक संरचाना की आवश्यकता प्रकट होती है। एक ऐसी संरचाना, जो कि आजकल के लोगों की समस्याओं, आवश्यकताओं, और चिंताओं का ध्यान रख लेती है, और यह समझता है, कि हमारी मानव जाति केवल स्वच्छ प्राकृतिक वातावरण में जीवित रह सकती है।

पारिवेषिक ज्ञान पर आधारित परिवेष-नीति का अंतर्राष्ट्रीय संघ (EEIU) इसी प्रकार की नवीन संरचना को विकसित, वितरित, और प्रस्तुत करता है। EEIU की बुनियाद है : **परिवेष-नीति**, जो हमें धरती पर जीवन के लिए परितंत्रों (ecosystems) का मूलभूत महत्त्व स्पष्ट करती है। अरबों वर्षों से विकसित **पारिवेषिक गतिशीलता** (ecological dynamics) जीवन का गहवारा, चालक, और निर्देशक शक्ति है। इस से धरती में जीवन के सब रूपों का जन्म, विकास, और मृत्यु तय किया जाता है। इसमें हमारी जाति *होमो सेपियन्स* (*Homo sapiens*) भी आती है। EEIU *होमो सेपियन्स* को सृष्टि का शिखर या धरती का शासक नहीं समझता है, बल्कि उसको हमारे विश्व-समुदाय का एक ही सदस्य समझता है। हम जानते हैं कि हमारी जिंदगी अन्य जीवों के साथ संतुलित सह-अस्तित्व में रहने पर निर्भर है, और हम यह भी समझते हैं कि यही संतुलन हमारी जाति की उत्तरजीविता की मुख्य पूर्वापक्षा है।

**आप हमारे संघ के सदस्य बनने के लिए सादर आमंत्रित हैं!**
**कृपया हमारे प्रयत्नों को मजबूती प्रदान करें!**

*Based on:* Kinne O (1997) Ethics and eco-ethics. Mar Ecol Prog Ser 153:1–3
Kinne O (2001) Eco-ethics further developed text 01.05.2001. EEIU Brochure, Inter-Research, Oldendorf/Luhe, p 1–6

© Inter-Research 2006

EEIU अधिक आत्मसंयम और विवेचनात्मक स्वमूल्यांकन को प्रोत्साहित करता है। हम उन लोगों से सहयोग की आशा करते हैं, जो कि हमारे विचारों और चिंताओं में भाग लने को तैयार हैं। हमें **मानवता के लिए एक नया घर**, एक नया परिवेष बनाना है, ऐसा परिवेष जो कि प्रकृति से प्रेम पर आधारित हो, उसका सम्मान करता हो, और उसके बृहद राहों और प्रयोजनों के बढ़ते हुए ज्ञान पर आधारित हो।

**संक्षिप्त रूप में हमारे उद्देश्य निम्नलिखित हैं :**

(1) परिवेष-नीति की कल्पनाओं और धारणाओं को आगे बढ़ाना और लागू करना।

(2) दुनिया के प्रत्येक भाग में EEIU की स्थानीय अवयवों को स्थापित और विकसित करना (कृपया पृ. 6 देखना)।

(3) परिवेष-नीति के सिद्धांतों को घरों में बच्चों, विद्यालयों में विद्यार्थियों और विश्वविद्यालयों में छात्रों को सिखलाना। जब हम परिवेष-नीति के सिद्धांतों को युवा पीढ़ी के मन-मस्तिष्क में स्थापित करने में सफल हो सकें, तभी EEIU के उद्दश्य को प्राप्त करने की आशा रहेगी, तभी प्रकृति और आधुनिक मानव-समाजों के बीच एक दीर्घकालीन निर्वाहयोग्य (sustainable) साम्यावस्था का निर्माण होने की संभावना रहेगी।

(4) EEIU के सिद्धांतों की ओर आकर्षित लोगों को सदस्यों के रूप में आमंत्रित करना और संबंधित समूहों और संघटनों से सहयोग की मांग करना।

(5) नीति-निर्धारकों, सामान्य जनता और समाचार-प्रसारकों को सूचित और प्रेरित करना, और जनता को तन-मन-धन से सहयोग देने के लिए आमंत्रित करना।

(6) समर्थकों की तलाश करना और उनसे दान देने के लिए अनुरोध करना।

वर्तमान स्थिति में यह अत्यावश्यक है कि हम समझें, कि जीवित रहने के लिए हमें मानवीय आवश्यकताओं और परितंत्र की निरोगता के बीच में एक दीर्घकालीन निर्वाहयोग्य संतुलन की जरूरत है। इसी संतुलन का अनुसंधान और इसका अनुरक्षण परिवेष-नीति के प्रमुख उद्देश्य हैं।

अपने उद्देश्य तक पहुँचने के लिए हमारे प्रमुख उपकरण सहयोग निम्न हैं :

- **परिवेष-नीति का अंतर्राष्ट्रीय संघ** जो कि 1998 में स्थापित किया गया (EEIU; www.eeiu.org)
- EEIU का मुखपत्र : **विज्ञान एवं पारिवेषिक राजनीतिशास्त्र में नैतिकता** (Ethics in Science and Environmental Politics) नामक अंतर्राष्ट्रीय वैज्ञानिक पत्रिका जो कि 1999 स्थापित किया गया (ESEP; www.esep.de)
- EEIU के स्थानिक अवयव – चैप्टर्स, युवा समूह, कर्मी बल (task forces)

तेजी से बढ़ते हुए EEIU की नवीनतम जानकारी के लिए कृपया हमारे वेबसाइट (www.eeiu.org) पर जाइए। अनुगामी पृष्ठों पर हमारे सिद्धांतों और अभिधारणाओं को रेखांकित किया गया है, और संघ के कार्यों और रचना को प्रस्तुत किया गया है।

**आप सादर आमंत्रिथ हैं :**

आप संघ के विकास के विषय पर होने वाले चर्चाओं में भाग लेने के लिए सादर आमंत्रित हैं। कृपया अँग्रेजी में संक्षिप्त रूप में लिखी गई पांडुलिपियों को "Ethics in Science and Environmental Politics" (ESEP) नामक पत्रिका के संपादकों में से किसी एक के पास भेजिए। संपादक के नाम और पता, साथ ही लेखकों के लिए मार्गदर्शन और ESEP के बारे में विस्तार-सहित जानकारी हमारी वेबसाइट पर उपलब्ध हैं। विवेचनात्मक या चुनौती पूर्ण योगदानों का हमेशा स्वागत रहेगा।

EEIU की सदस्यता ग्रहण करने के लिए हमारा संघ आपसे कोई शुल्क नहीं लेता है, परंतु सदस्यों से संघ का विकास आगे बढ़ाने के काम में सहायता करने की अपेक्षा रखता ह।

**कृपया अपनी सदस्यता के प्रार्थना-पत्र को निम्न पते पर भेजें :**

EEIU Headquarters,
Nordbünte 23, 21385 Oldendorf/Luhe, Germany
Fax: +49 4132 8883, E-mail: eeiu@eeiu.org

**सुविधा के लिए हमारी वेबसाइट www.eeiu.org/members.html पर से फार्म को प्रिंट कर लें।**

# परिवेष-नीति : सिद्धांत और अभिधारणाएं

## परिवेष-नीति के सिद्धांत

इस धरती पर जीवन परितंत्रों के भीतर विकसित हो गया है और आज तक ऐसा होता ही रहता है। यह जीवन इसके परिचित रूप में बिना स्वच्छ परितंत्रों के जारी नहीं रह सकेगा। जीवन के सब रूपों का जन्म, विकास, और मृत्यु परितंत्रों के गतिक शक्तियों के काबू में हैं। परितंत्रों में हर चीज बदलती रहती है, एक स्थिति से दूसरी स्थिति में बहती रहती है। दूसरी ओर, पारंपरिक नीति में परिवर्तन का विरोध करने और स्थिर बने रहने की प्रवृत्ति होती है। उसके साथ ही वह असंतुलित है, और जीवन के करोड़ों रूपों में से एक ही जाति पर केंद्रित ह – *होमो सेपियन्स* ।

आधुनिक मानव समाज के सामने जो विशाल चुनौती खड़ी है, उसका मुकाबला करने के लिए हमें एक नवीन नैतिक अवधारणा की आवश्यकता है। एसी अवधारणा जो कि इस संकुचित और आत्मकेंद्रित दुनिया की हद से, हमारी अपनी तात्कालिक आवश्यकताओं के लिए बनाई हुई दुनिया की हद से आगे बढ़ जाएगी। हमें एक ऐसी संरचना की आवश्यकता है, जो कि प्रकृति और मानवता के साथ-साथ आगे बढ़ सकेगी, जो अपने आप को बदलती हुई परिस्थितियों को ढाल सकेगी और परिवर्तन, विकास, और समीक्षा के लिए खुली रहेगी।

## *धर्म और दर्शन में नैतिकता*

अनेक सदियों से धर्मशास्त्री (theologians) और दार्शनिक (philosophers) नीति और नैतिकता में बड़ी अभिरुचि लेते आए हैं। दोनोंने मानव-आचरण के परीक्षण और विवेचन में अनंत प्रयास किए हैं। उन्हीं से प्रतिपादित हुए नीतिशास्त्र के सिद्धांत और विचार, मानवता के बड़े हिस्सों के लिए मार्गदर्शक और सहचर के रूप में काम आए हैं। इसी लिये उन विद्वानों

को महान श्रेय प्रदान किया जाना चाहिए।

धर्मशास्त्री और दार्शनिक, “ethics” (नैतिकता) और ”morals” (सदाचरण) दोनों शब्दों का प्रयोग प्रायः समानार्थक रूप में करते हैं। दोनों शब्दों का अर्थ उसी मानव-आचरण से संबंधित है, जो कि किसी समाज में अधिकांश लोगों से मानदंड के रूप में माना जाता है। मानवीय रिश्तों में क्या सही और क्या गलत है, क्या अच्छा और क्या बुरा, यह मानदंड इसी का चित्र है। धर्मशास्त्रियों के विचार श्रुतियों पर आधारित हैं, दार्शनिकों के तर्कों और प्रमाणों पर। दार्शनिकों की एक प्रमुख विचारधारा ने नैतिक सिद्धांतों और नियमों को बनाने के लिए, नियामक मानदंडों की जांच करके उनका प्रतिपादन किया है। दूसरी ने, अच्छा-बुरा के मध्य का नैतिक निर्नय करने के लिए सिद्धांतों और विधियों को प्रस्तुत किया है।

ईश्वर में विश्वास होने की वजह से धार्मिक लोग अलौकिक घटनाओं में विश्वास करने की ओर झुकाव करते हैं। उनका कहना है कि ईश्वर ने ही इस दुनिया का सृजन किया है और वही इसका नियंत्रक और नियमों का प्रतिपादनकर्ता है। आस्तिक लोग निर्नयों की व्याख्या कर सकते हैं और नियमों के बारे में चर्चा कर सकते हैं, परंतु उनका विरोध करने की या उनको भंग करने की इजाजत नहीं है, और न ही किसी नियम में कोई मौलिक परिवर्तन करने की अनुमति है। दार्शनिकों ने उन की ओर से जटिल, कुछ लिहाज से प्रतिवादी यंत्र-तंत्र और पद बनाए रखे हैं। उनका ध्यान सैद्धांतिकी (theory) ही पर है और वे तर्क-वितर्क करने की ओर झुकाव करते हैं। दुनिया में धर्मशास्त्री मुख्यतया अपने विश्वासों के प्रतिबिंब देखते हैं, दार्शनिक अपने तर्क-वितर्कों के।

धर्मशास्त्रियों और दार्शनिकों, दोनों ने दुनिया के मानवकेंद्रित और भूकेंद्रित चित्र बनाए हैं, जिनका संबंध हमारे परिवेष की असली स्थिति से कम है। *होमो सेपियन्स* दुनिया का केंद्र नहीं है, जैसे कि हमारी पृथ्वी ब्रह्मांड का केंद्र नहीं है। *होमो सेपियन्स* तो करोड़ों जातियों में से एक ही जाति है, जो जीवप्रणाली का एक ही हिस्सा है, जैसे कि डॉल्फिन, चूहा या वायरस। हमारी आकाशगंगा के करोड़ों ग्रहों में से पृथ्वी तो एक ही ग्रह है, और ऐसी करोड़ों आकाशगंगा हैं।

अधिकाँश धर्मशास्त्रियों और दार्शनिकों की यह मान्यता है कि सार्वभौमिक नैतिक मानदंड बनाए जा सकते हैं। जैसे भी हो, कुछ नैतिक विचार स्थानीय परंपराओं पर आधारित हैं, जैसे कि उनके पालन करनेवाले। सार्वभौमिक मानदंडों की सहायता से मूलभूत सिद्धांतों का प्रतिपादन किया जाएगा, परंतु उन के अंदर धार्मिक और साँस्कृतिक विभिन्नताओं के लिए काफी जगह छोड़ देनी चाहिए। कुछ लोगों का आग्रह है कि जिन सिद्धांतों का प्रतिपालन हम पीढ़ियों से सफलता से करते आए हैं, वे सही और शुभ हैं, इसी लिए वे नैतिक माने जा सकते हैं। क्या हम परिवेष-नीति में नीति के भिन्न-भिन्न रूपों को स्वीकार कर सकते हैं? क्यों नहीं? – जब तक कि वे मानवीय मान-मर्यादा, हकों, और स्वतंत्रता का आदर करते रहें, जैसे कि ये बातें संयुक्त राष्ट्र द्वारा परिभाषित की गई हैं। नीति में कुछ हिस्से हमेशा ही व्यक्तिपरक, अप्रमाण रहेंगे। नीति विचार-विमर्श के लिए खुली रहनी चाहिए, बदलने को तैयार रहनी चाहिए। समय के साथ-साथ प्रत्येक वस्तु बदलती रहती है, इस प्राकृतिक नियम का कोई भी अपवाद नहीं है!

## *परिवेषविज्ञान में नैतिकता : पारिवेष-नीति*

अरबों-खरबों वर्षों से इस धरती पर, जीवन का विकास गतिशील परितंत्रों के अंदर सामंजस्य रूप से समाविष्ट हुआ है। इन तंत्रों के बिना कोई भी जाति जीवित नहीं रह सकती, न *होमो सेपियन्स* या न कोई और। परितंत्रों में जैविक और अजैविक अवयव हैं, जो कई तरीके स, अक्सर जटिल रूप से एक दूसरे से संबंधित हैं। जैविक अवयव तो एक दूसरे से, और एक दूसरे के विरुद्ध, काम करते हैं, एक दूसरे की शक्ति का उपयोग करते हैं, साथ ही वे और उनके अजैविक परिवेष एक दूसरे पर प्रभाव करते हैं। जीवन परिवेष को परिवर्तित करता है, और परिवेष जीवन को।

परितंत्र के जैविक और अजैविक अवयवों के बीच ये जटिल परस्पर-संबंध, इस धरती पर जीवन के मूल तत्त्व हैं, जहां तक हम परिवेषविज्ञानी उनको ग्रहण कर सकते हैं। विकास के ये मुख्य साधन हैं, जो जीवन-प्रणाली को शक्ति और दिशा देते हैं। इस संदर्भ में किसे अच्छा कहा जाए और किसे बुरा? प्रकृति की मूल योजना में तो कोई अच्छा-बुरा नहीं है।

जीवन का विकास पारिवेषिक कानून के कठोर पंजे के नीचे होता है : (1) निष्ठुर प्रतिस्पर्धा, शोषण-दोहन, अनियंत्रित आत्महित, दूसरों के पदार्थों को ग्रहण करना। (2) प्रत्येक जीव और वस्तु परितंत्र की बहती हुई ऊर्जा और पुनश्चक्रित (recirculated) द्रव्यों में समाविष्ट होता है। (3) समय के साथ परिपक्कन, विविधता, स्वनियंत्रण, और अंतरजातीय संबंधों का निर्माण होता ह। (4) विविधभंजकों को निष्ठुर दंड। ऐसा था वह पुरातन विश्व जिसमें *होमो सेपियन्स* का जन्म हुआ था, जिसमें हमारी जाति ने अपने समय का निन्यानवे प्रतिशत गुजारा था, और जिसमें उसके सारे आवश्यक ढाँचे और प्रतिक्रियाएं विकसित हुए। हमारे शरीर की अरबों खरबों कोशिकाओं के अंदर अभी तक वे आनुवाँशिक प्रोग्राम रखे हुए हैं, जो कि उस बीते हुए परितंत्र के संदर्भ के लिए विकसित हुए थे।

तब क्या हुआ? इससे पहले कभी भी किसी भी प्राणी ने इतने बड़े पैमाने पर परितंत्र के आरोग्य की अवहेलना की नहीं थी, जैसे कि आधुनिक मानव कर रहा है। आज से पहले कभी भी किसी एकमात्र जाति ने धरती माँ को इतनी अप्रशम्य निष्ठुरता से परिवर्तन नहीं किया था, और न ही अपने परितंत्र पर इतना विशाल प्रभुत्व स्थापित किया था। हम जो कर रहे हैं और हमें जो करना चाहिए, इन विषयों के बीच इससे पहले कभी इतना बड़ा अंतर नहीं हुआ था।

आधुनिक मानव के सामने असाधारण चुनौतियाँ खड़ी हो गई हैं। उनका सामना करने के लिए, नीति के अवधारण में न केवल मानव समाज को, बल्कि परिवेष और जीवन के विविध रूपों को समाहित करना होगा। इस परिवर्धित अवधारण के लिए जो शब्द प्रस्तुत किया जा रहा है, वह है **परिवेष-नीति** अर्थात ऐसी नीति जिसमें मानवीय सोच-विचार और आचरण इस प्रश्न का समाधान करने को समर्पित है, कि **मानव-प्रकृति के संयोग** के लिये क्या अच्छा या बुरा, क्या लाभदायक या हानिकर ह।

## परिवेष-नीति की अभिधारणा

हमारी दुविधा यह है कि जिस विश्व में हम पैदा हुए थे, जिस विश्व के लिए हम बनाए गए थे, उससे हम बहुत हद तक छूट गए हैं। इस लिहाज से हम भगोड़े हैं, विविधभंजक हैं जो अपने निजी उद्देश्यों के लिए प्रकृति के नियमों से बच निकलने में अतिकुशल हो गए हैं, जो सह-अस्तित्व को प्रभुत्व में रूपांतरित करने में

सिद्धहस्त हो चुके हैं। हम कठोरता से दंडित किया जाएंगे, जब तक हम अपने आधुनिक मानव और प्राचीन परितंत्र के रहन-सहन के बीच एक नवीन संतुलन स्थापित न करें, जब तक हम प्रकृति और जनता की उपापचयन-पद्धति के मध्य संगतता को पुन:स्थापित न करें। **यही परिवेष-नीति की प्रथम अभिधारणा है।**

जिस प्रकार वर्तमान में परिवेष-संरक्षण (environmental protection) कार्यान्वित किया जा रहा है वह संभवत: भ्रामक और आशंकापूर्ण है। क्यों? क्योंकि इसका प्रमुख उद्देश्य, प्रकृकि के निकृष्टतम शत्रु (मानव) के परिवेष को संरक्षित करना है। तो इसका परिणाम क्या होगा? यह पहले से चली आ रही उग्र मानव प्रभुत्वता को और अधिक समर्थन प्रदान करेगा। हमें परिवेष-संरक्षण की एक नवीन अवधारणा चाहिए। हमें अपने सहगामी प्राणियों के परिवेषों को भी संरक्षित करना होगा। वे स्वयं कुछ नहीं बोल पायेंगे। हमारे सारे ज्ञान की सहायता से हमें उनके हित में कार्य करना होगा। हमारी सभ्यताओं और शिक्षा-प्रणालियों को इस विषय को ध्यान में रखना होगा। उन्हें पारिवेषिक ज्ञान और पारिवेषिक सोच-विचार के ढंग प्राप्त करके अपने सदस्यों और विद्यार्थियों को सिखाने होंगे। और उन्हें परितंत्र के अन्य अवयवों के प्रति मानव के दायित्व लेने पर आग्रह करना होगा। **यही परिवेष-नीति की द्वितीय अभिधारणा है।**

कड़े संघर्ष के फलस्वरूप प्रकृति का उद्भव हुआ है। ऐसे संघर्षों से मानव समाज को बचना होगा। हमारे जटिल समाजों को अक्षम बनाए रखने के लिए हमें द्वंद्व-समाधान (conflict resolution) की कुशलता चाहिए, तथा अर्थव्यवस्था और परितंत्र के मध्य संगति बैठाने की संकल्पशक्ति। ये दोनों एक ही सिक्के की दो पहलू हैं, और दोनों ही का मूल्यांकन नैतिक सिद्धांतों से करना होगा। इसी लिए हमें यह स्पष्ट करना है, कि हमारी अर्थव्यवस्था और उनकी पारिवेषिक बुनियाद के लिए क्या अच्छा या लाभदायक है, और क्या बुरा या हानिकारक है। और हमें यह भी देखना होगा कि हम अच्छे परिणाम किस प्रकार वृद्धि करें और बुरे परिणाम किस प्रकार कम करें। **यही परिवेष-नीति की तृतीय अभिधारणा ह।**

इस नवीन विश्व में हमारी उत्तरजीविता के लिए हमें अपनी निहित पाश्विक प्रवृत्तियों को नियंत्रित करना पड़ेगा। परितंत्र के नियमों को भंग करने से बचने के लिए हमें नए नियमों को बनाना होगा, जो हमारे प्राचीन प्रेरणाओं, इच्छाओं और सहज प्रवृत्तियों को वश में रखेंगे। प्रकृति की बृहद अभिकल्पना के अनुरूप हमें नवीन गुणों को बढ़ावा देने और अमल करने की आवश्यकता होगी, जैसे स्वनियंत्रण, नम्रता, सत्यनिष्ठा। हमें शाँति, आत्मसंमान और दूसरों का संमान करना, न्यायशीलता और मानव अधिकार जैसे उद्देश्यों को प्रतिपादित करना होगा। सद्चरित्रता, नि:स्वार्थता, और प्यार जैसे उच्च आदर्शों को बढ़ावा देना होगा। इन सब आदर्शों की नैतिकता के संबंध में धर्मशास्त्रियों और दार्शनिकों में भी संमति है। **यही परिवेष-नीति की चतुर्थ अभिधारणा है।**

मानवता के भविष्य के लिए किसी भी अन्य तथ्य की अपेक्षा दो प्रमुख अंतर्दृष्टियाँ महत्त्वपूर्ण हैं : –

(i) हम केवल अक्षत प्रकृति में ही अस्तित्व वनाए रख सकते हैं, इस लिए हमें प्रकृति की अक्षुणता को अपने असंतुलित अहंभाव से बचाकर रखना होगा।

(ii) आगे से हम ऐसे नैतिक सिद्धांतों को स्वीकार नहीं सकते, जो कि विज्ञान संमत यथार्थता का खण्डन या उसकी अवहेलना करते रहते हैं। प्रकृति में मानव जाति कैसी भूमिका अदा करेगी, इस प्रश्न पर नए सिरे से सोच-विचार होना चाहिए और हमारी भूमिका निष्पक्ष रूप से पुन:परिभाषित होनी चाहिए। **यही परिवेष-नीति की पंचम अभिधारणा है।**

इस विश्व में युद्ध, भूख, निर्धनता और दुर्दशा करोड़ों के मानवों का भाग्य है। ऐसी परिस्थिति में ऊपर वर्णित चुनौतियों का सामना करने के लिए क्या हमारे पास पर्याप्त इच्छाशक्ति, समय और श्रम है? यदि इस प्रश्न का उत्तर “ना” है तो निकट भविष्य में ही *होमो सेपियन्स* इस धरती से विलुप्त हो जाएगा। **यही परिवेष-नीति की षष्टम अभिधारणा है।**

**परिवेष-नीति का परिवर्धन और उसका कार्यान्वयन, मानव आवश्यकताओं और सशक्त परितंत्र के बीच अनुकूल संबंध स्थापित करने और उसको बनाए रखने के लिए सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण पूर्वापेक्षा है। हमारी जाति की जीवन-अवधी बढ़ाने में भी यह अत्यवश्यक होगा। केवल परिवेष-नीति के क्रमानुसर विकास और कार्यान्वयन के माधयम से ही विध्वंसात्मक महाविनाश को रोका जा सकता है।**

## अर्थव्यवस्था और परितंत्र के संबंध में अतिरिक्त विवरण

परिवेष-नीति की तृतीय अभिधारणा से स्पष्ट होता है कि अर्थव्यवस्था और परिवेष दोनों एक ही सिक्के के दो पहलू हैं। यहाँ हम इनके मध्य की भिन्नताओं को प्रतिपादित करेंगे।

अर्थशास्त्र एक ही जाति, मानव प्रजाति की गतिविधियों से संबद्ध है। मानव की अर्थव्यवस्था, प्रकृति प्रदत्त संसाधनों को केवल स्वयं के हितों के लिए उपयोग में लाने पर जोर देती है। इस लिए समय के साथ साथ मानव-प्रकृति का सामंजस्य संकट में पड़ सकता है या बिगड़ भी जा सकता है।

परिवेषविज्ञान विभिन्न सहवर्ती प्रजातियों और उनके परिवेषों के मध्य के अंतर्संबंधों का अध्ययन करता है। परितंत्र ऐसे जैवतंत्र हैं, जो वैयक्तिक स्वार्थपरता को कम करके सर्वकल्याणकारी पारस्परिकता का बढ़ावा देते हैं।

आर्थिक प्रक्रियाएं एकदिशीय होती हैं। प्राकृतिक कच्चे माल को लेकर शुरु होती हैं, परंतु उनका उत्पाद ऐसे पदार्थ होते हैं जो कि प्रकृति के लिए न्यूनाधिक विजातीय होते हैं। अर्थव्यवस्था परितंत्र के संसाधन पृथक करके या छीन लेके, उनका मानवीय उपयोग के लिए रूपांतरण करती है। रूपांतरण में बहुत ऊर्जा प्रयोग की जाती है, और बहुत अपशिष्ट पदार्थ निर्माण होते हैं। रूपांतरण का उत्पादन ग्राहकों को बेचा जाता है, जो उनकी ओर से उत्पादों को अंतत: अपशिष्ट पदार्थों में रूपांतरित करते हैं। यह विशाल एकदिशीय विघटन निरंतर बढ़ता जा रहा है। इसका परिणाम यह होगा कि जीवन को आधार प्रदान करने वाली प्राकृतिक क्षमताों की हानि होगी।

परितंत्रियों की प्रक्रियाएं चक्रीय (cyclical) होती हैं। परितंत्र के अवयव न तो संसाधनों को छीन लेने या पृथक करने का प्रयास करते हैं, और न ही वे इनको विजातीय पदार्थों में रूपांतरित करते हैं। वे प्रकृति प्रदत्त ऊर्जा का उपयोग कर पुराने संसाधनों को नवीन संसाधनों में रूपांतरित करते हैं। ऐसा बहुदिशीय प्रक्रियाओं का संजाल जीवन को आधार प्रदान करता है और उद्विकासीय क्षमता को भी प्रदान करता ह।

परिवेष-नीति के लिए इसका क्या महत्त्व है?

(1) जहाँ तक हो सके संसाधनों के एकदिशीय विघटन के स्थान पर चक्रीय पुनर्प्रयोग करना चाहिए।

(2) परितंत्रों की प्रक्रियाओं का व्यापक अध्ययन कर के प्राप्त हुई जानकारी के आधार पर हमारी अर्थव्यवस्थाओं और समाजों का पुनर्निर्माण करना चाहिए।

(3) हमारे चारों ओर व्याप्त वैश्विक परिवेष का मानव समाज के साथ सामंजस्य पुन:स्थापित करना और हमारे द्वारा प्रकृति पर पड़ने वाले हानिकारक प्रभावों को कम करना चाहिए।

(4) धरती पर जनसंख्या और उसका प्रति व्यक्ति ऊर्जा के उपयोग को परितंत्रों के उपयोग की क्षमता के अनुरूप नियंत्रित करना। यह प्रथमत: शासकीय और अंत:शासकीय निकायों का कार्य है, परंतु परिवेष-नीति के सिद्धांतों और धारणाओं का वैश्विक कार्यान्वयन इन अत्यंत महत्त्वपूर्ण विषयों को गति प्रदान करेंगे।

अर्थव्यवस्थाएं भी बिना नैतिकता के सफल नहीं हो सकतीं। **आर्थिक नीति** (economic ethics = "econ-ethics"), इन प्रयासों को समाविष्ट करता है – प्रकृति के शोषण पर नियंत्रण, पुन:समायोजन, निरोगी परितंत्रों के प्रति श्रद्धा।

उपर्युक्त समस्त उद्देश्यों को आसानी से एक ही रात में प्राप्त नहीं किया जा सकता। नवीन सिद्धांतों, नियमों और तकनीकों के विकास और उनके कार्यान्वयन में समय, ज्ञान और राजनैतिक इच्छाशक्ति आवश्यक हैं। परंतु हमें **अभी से ही** ये प्रयास प्रारंभ कर देने चाहिएं।

**यदि हम परिवेष-नीति और आर्थिक नीति के उद्देश्यों को पाने में सक्षम हो सकें, तो हम अपनी सभी अनिवार्य अपेक्षाओं को पूर्ण कर सकेंगे, और प्रकृति को विकृत किए बिना और भावी पीढ़ियों के अवसरों को हानि किए बिना ही एक सुखमय जीवन का आरंभ कर सकेंगे।**

# EEIU की संरचना और गतिविधियाँ

EEIU 1998 **में स्थापित हो गया।**

## संस्थापक

**Prof. Dr. Otto Kinne**
**President**
**Headquarters, Oldendorf/Luhe, Germany**

**Acad. Prof. Gennady Polikarpov**
**Vice President**
**General Office, Sevastopol, Ukraine**

## निर्देक

**New Condirectors and coordinators are presently being selected and will be appointed as soon as possible.**

## EEIU की वैश्विक और स्थानिक गतिविधियाँ

EEIU के दो वैश्विक अवयव हैं : मुख्यालय और सामान्य कार्यालय। साथ ही तीन स्थानिक अवयव हैं : चैप्तर्स (शाखाएं), युवा समूह और कर्मी बल (कृपया सार्णी-1 देखना)। हमारा संघ केंद्रीकरण और अफ़सरशाही को कम करने का, और स्वतंत्र मानस-केंद्रों की संख्या को बढ़ाने का प्रयास करता है।
स्थानिक अवयवों के प्रथम सभापतियों की नियुक्ति, EEIU के अध्यक्ष या उपाध्यक्ष के द्वारा ही होती है। उसके बाद स्थानिक अवयव अपने ही सभापति को चुन सकती हैं, जिन्हें बाद में EEIU के अध्यक्ष द्वारा औपचारिक रूप से नियुक्त किया जाएगा।

अपने उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए हम विविधता और स्वाधीनता का समर्थन करते हैं।

## अति दीर्घ पथ पर पहले ही कदम

अब तक कुछ शाखाएं नामांकित, पंजीकृत की जा चुकी हैं, जबकि कुछ अन्य निर्माण की अवस्था में हैं। कुछ ऐसे संगठन जो हमारे समान ही उद्देश्य रखते हैं, EEIU से संबद्ध होने पर विचार कर रहे हैं।

EEIU के स्थानिक अवयवों से संबद्ध कार्यक्रमों और गतिविधियों की जानकारी EEIU के वेब पेजों (www.eeiu.org) पर प्रकाशित होती रहती हैं।

**EEIU ने विश्व भर का ध्यान आकर्षित किया है और हमें विश्व भर से प्रोत्साहन प्राप्त हो रहा है। ये समस्त बातें हमें अपनी योजनानुरूप आगे बढ़ने के लिए उत्साहित करती है।**

## वित्तीय प्रबंधन

ऐसी आशा की जाती है कि EEIU के अवयवों को चलाने का खर्च समर्थकों के द्वारा वहन कर लिया जाएगा। संघ का संस्थापक-समर्थक इंटर-रिसर्च (Inter-Research) है। अन्य समर्थकों को भी आर्थिक योगदान देने के लिए आमंत्रित किया जाता ह।

दान के कर से छुट प्राप्त होगी। निवेदन करने पर समर्थकों को मुख्यालय द्वारा उपयुक्त दस्तावेज उपलब्ध कराए जाएंगे।

यदि विपरीत आदेश ना मिले तो समर्थकों के नाम हमारे वेब पेजों पर उपलब्ध सूची में और मुद्रित संचार माध्यमों में शामिल हो जाएंगे।

समर्थकों द्वारा प्रदत्त आर्थिक सहायता का उपयोग, केवल और केवल संघ की गतिविधियों, विशेषकर स्थापित अवयवों की गतिविधियों को संचालित करने के लिए किया जाएगा। समर्थकों से प्राप्त धन के उपयोग की समस्त जानकारी हमारे मुख्यालय पर उपलब्ध है।

EEIU की सदस्यता ग्रहण करने पर कोई शुल्क नहीं लिया जाता। परंतु सदस्यों को संघ के कार्य में सहयोग देने के लिए, कर मुक्त आर्थिक सहातया के लिए प्रेरित किया जाता है।

## हमारे प्रकाशन

ESEP (www.esep.de) के अतिरिक्त, EEIU के मामलों का प्रकाशन हमारे संघ के वेब पेजों पर किया जाता है, जिनका प्रबंध मुख्यालय द्वारा किया जाता है (eeiu@eeiu.org)।

स्थानिक अवयव अपने समाचार, उपलब्धियाँ, समीक्षाएं, प्रस्ताव और समस्याएं इत्यादि संघ के वेब पेजों पर प्रकाशित करते रहते हैं। वे अपने स्वयं के संपादकों को चुन सकते हैं। प्रकाशित करने से पहले स्थानिक संपादकों को मुख्यालय के समन्वयी (Coordinator) से पुछ-ताछ करनी चाहिए। किसी भी जिज्ञासा की पूर्ती के लिए कृपया सामान्य कार्यालय या मुख्यालय पर संपर्क करें।

सारणी 1 : EEIU के वैश्विक और स्थानिक अवयव और उनकी गतिविधियाँ

| अवयव | | प्रमुख गतिविधियाँ |
|---|---|---|
| वैश्विक अवयव | मुख्यालय सामान्य कार्यालय | संघ के वैश्विक मामलों और नीतियों को विकसित और संयोजित करना, उनका निरीक्षण करना। अध्येताओ (Fellows), स्थानिक अवयवों, सभापतियों/अध्यक्षों और सदस्यों को नियुक्त करना। संघ का मुखपत्र "विज्ञान एवं पारिवेषिक राजनीतिशास्त्र में नैतिकता (ESEP)" और संघ के वेब पेजों का प्रबंध करना। संबंधित संगठनों, राजनीतिविज्ञों और समाचार-प्रसारकों से संबंध स्थापित करना। |
| स्थानिक अवयव | शाखाएं | देशों, नगरों, विश्वविद्यालयों के स्तर पर गतिविधियों और नीतियों को आयोजित करना। परिवेष-नीति का पाठ्यक्रम बना कर सिखाना। अपने कार्यक्रमों की योजना बनाना। सदस्यों की नियुक्ति करना। अपने समर्थक तलाशना। परिवेष-नीति और आर्थिक नीति के सामान्य आंदोलन को अपनी परिस्थिति के संबंध जानकारी प्रदान करना। मुख्यालय को स्थानिक गतिविधियों का समाचार भेजना। |
| | युवा समूह | युवाओं को परिवेष-नीति और आर्थिक नीति का अभ्यास करना, उनके सिद्धांतों को अमल करना, सुधारना और प्रोत्साहित करना। सदस्यों की नियुक्ति करना। अपने समर्थक तलाशना। अपनी बैठकें और गोष्ठियाँ आयोजित करना। अपने मामलों का विवरण संघ के वेब पेजों पर प्रकाशित करना। |
| | कर्मी बल | समीक्षा करना। EEIU के आंदोलन के लिए महत्त्वपूर्ण सूझ-बूझ प्रदान करना। परिवेष-नीति और आर्थिक नीति को सिखाना, अमल करना, सुधारना और प्रोत्साहित करना। अपनी बैठकें आयोजित करना। अपने समर्थक तलाशना। संघ के वेबपेजों पर अपनी उपलब्धियों का ब्यौरा प्रकाशित करना। |

*इंटर-रिसर्च (Inter-Research) की EEIU से संबद्ध गतिविधियाँ*

***पुस्तकों की शृंखला (Book Series)***

- ***EE Books:*** *हमारे समकालीन पारिस्थितिकिविज्ञों (International Ecology Institute Laureates) द्वारा लिखी हुई ये पुस्तकें, आवश्यक दृष्टिकोणों और तथ्यों को प्रस्तुत करती हैं, जिनसे पाठक प्रकृति और स्वयं के बारे में बेहतर समझ प्राप्त कर सकें, ताकि वे मानवीय उत्तरजीविता और कल्याण को तथा परितंत्रों के आरोग्य को बढ़ावा दे सकें।*
- ***Top Books:*** *विज्ञान में अनुभावी लेखकों द्वारा उपन्यास-नाटक-पटकथाओं के रूप में लिखी हुई पुस्तकें, जो आधुनिक मानवता की असफलताओं, चुनौतियों, सुअवसरों और उत्तरदायित्वों पर ध्यान केंद्रित करती हैं। वे पाठकों की एक बड़ी श्रेणी को संबोधित करती हैं।*
- ***ESEP Books:*** *ये पुस्तकें ESEP के शोधपत्र के सिद्धांतों पर प्रकाश डालती हैं। EEIU की अवधारणात्मक बुनियाद को अधिक सशक्त और गहरा बनाने से वे हमारे संघ के उद्देश्यों को आगे बढ़ाती हैं।*

***वैज्ञानिक शोधपत्र (Scientific Journals)***

- ***विज्ञान एवं पारिवेषिक राजनीतिशास्त्र में नैतिकता (ESEP)*** *– यह नवीन शोधपत्र, एक नवीन नैतिक संरचना के विकास के लिए एक वैश्विक मंच प्रदान करता है, जो कि परिवेष-नीति (eco-ethics) और आर्थिक नीति (econ-ethics) पर, इनके विज्ञान और राजनीति से संबंध पर, तथा इनका मानव और मानवता के भविष्य के लिए अत्याधिक महत्त्व पर ध्यान देती है।*
- ***समुद्री परिवेषविज्ञान प्रगति शृंखला (Marine Ecology Progress Series)*** *और* ***जलीय जीवाणु का परिवेषविज्ञान (Aquatic Microbial Ecology)*** *: ये दो प्रमुख वैज्ञानिक शोधपत्र दो प्रकार के लेख प्रकाशित करते हैं : (1) परितंत्रों की कार्यप्रणाली के विषय पर महत्त्वपूर्ण शोध-परिणाम, (2) परिस्थिति-वैज्ञानिक निबंध जो प्रायः परिवेष-नीति से सीधे संबंधित हैं।*

*इंटर-रिसर्च (Inter-Research) के अंतर्गत वर्तमान 30 औपचारिक रूप से नियुक्त कर्मचारी हैं और विश्व भर में फैले हुए 1.000 से अधिक अवैतनिक सहयोगी हैं। इंटर-रिसर्च के बारे में विस्तार से जानने के लिए कृपया www.int-res.com पर परामर्श लें।*

# परिवेष-नीति के अंतर्राष्ट्रीय संघ के समर्थक

**स्थापक-समर्थक : Inter-Research, Oldendorf/Luhe, GERMANY**

- Dr. Heleny Florou, Athens, GREECE
- Prof. F. Ward Whicker, Fort Collins, Colorado, USA
- Dr. Maxim B. Gulin, Sevastopol, UKRAINE
- Prof. Otto and Helga Kinne, Oldendorf/Luhe, GERMANY
- Prof. John and Jean Cairns, Blacksburg, Virginia, USA
- Volksbank Lüneburg, GERMANY
- Lighthouse Foundation, Hamburg, GERMANY (www.lighthouse-foundation.org)
- Mary Batson, Hamburg, GERMANY